KHAN GLOBAL STUDIES
KGS Campus, Sai Mandir, Musallahpur Hatt, Patna - 6
Mob : 8877918018, 875735880
BPSC - Polity
By : Karan Sir

दबाव समूह

दबाव समूह का अर्थ क्या है?

- दबाव समूह शब्द का प्रयोग उन हित-समूहों के लिये किया जाता है जिनके प्रभाव डालने के तरीके सामान्य माध्यमों की अपेक्षा अधिक दबावपूर्ण होते हैं। ये समूह अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये दबाव के अतिरिक्त असंवैधानिक तरीके अपनाने से भी नहीं हिचकिचाते हैं।
- दबाव समूह ऐसे ही संगठन है जो औपचारिक रूप से राजनीतिक प्रक्रिया में भाग नहीं लेते, न ही अपने उम्मीदवार खड़े करते हैं। इसके बजाय वे अपने सदस्यों के हितों की प्राप्ति के लिये राजनीति को प्रभावित करते हैं। वर्तमान समय में 'नागरिक समाज संगठनों' को प्रमुख दबाव समूह के रूप में देखा जाता है।

दबाव समूह के प्रकार

- राजनीति विज्ञान के अनेक विद्वानों ने दबाव समूहों के वर्गीकरण के अनेक आधार बताये हैं।
- ब्लेंण्डल के अनुसार, दबाव समूह मुख्यत: दो प्रकार के होते हैं- सामुदायिक तथा संघात्मक ।
  - सामुदायिक दबाव समूह वे समूह है जिनकी उत्पत्ति में लोगों के सामाजिक संबंधों, भावनात्मक लगावों एवं लोगों की एक समान दृष्टि की भूमिका होती है। ऐसे समूहों का संगठन औपचारिक और अनौपचारिक दोनों रूपों में हो सकता है।
  - संघात्मक दबाव समूह वे दबाव समूह हैं जो किसी विशेष हित की प्राप्ति के लिये बनाए जाते हैं। ऐसे समूहों की स्थापना, अस्तित्व उनकी कार्यशैली विशिष्ट हितों के साथ जुड़ी रहती है।
- समुदायक दबाव समूह के दो रूप हैं- प्रथागत तथा संस्थागत।
  - ऐसे दबाव समूह जिन की कार्यप्रणाली तथा उनके सदस्यों के परस्पर संबंधों में प्रथाओं, परंपराओं, रूढ़ियों, रीति-रिवाजों की प्रधानता होती है, प्रथागत सामुदायिक दबाव समूह कहलाते हैं, जैसे- अखिल भारतीय क्षत्रिय समाज, अखिल भारतीय दलित समाज आदि।
  - संस्थागत दबाव समूह औपचारिक रूप से संगठित होते हैं जिनसे पेशेवर लोग संबद्ध होते हैं। ये सरकारी तंत्र के भाग होते हैं और शासन पर अपना प्रभाव छोड़ने का प्रयास करते हैं। इन समूहों में व्यापक तौर नौकरशाही संगठनों को रखा जाता है। उदाहरण के लिये पश्चिम बंगाल सिविल सर्विसेज एसोसिएशन एक संस्थागत दबाव समूह है।

संघात्मक दबाव समूह के दो रूप हैं-
संरक्षक एवं तथा उत्थानात्मक।

- **संरक्षणात्मक दबाव समूह** के लक्ष्य विशिष्ट होते हुए भी सामान्य हो सकते हैं। इसके अंतर्गत श्रम संघ, व्यावसायिक संगठन आदि को शामिल किया जाता है। जैसे- फेडरेशन ऑफ इंडियन चौंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (FICCI), एसोचेम आदि।
- **उत्थानात्मक दबाव समूह** में वे दबाव समूह होते हैं, जिन्हें किसी विचार एवं दृष्टिकोण के प्रचार तथा समाज को उन विचारों, दृष्टिकोण के माध्यम से उन्नत बनाने के लिये बनाया जाता है। निशस्त्रीकरण, नारी उत्थान, विश्व शांति हेतु बनाए गए दबाव समूहों को इनमें शामिल किया जाता है।

दबाव समूह की विशेषताएं

दबाव समूह की निम्नलिखित विशेषताएं हैं जिनको बिन्दुवार दर्शाया गया है-

- दबाव समूह औपचारिक रूप से संगठित व्यक्ति समूह होते हैं।
- दबाव समूह के निर्माण का आधार स्वहित होता है और इसी की प्राप्ति करना इसका ध्येय भी होता है।
- दबाव समूह सरकार में भाग नहीं लेते, लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से सरकार की नीतियों को प्रचारित करते हैं।
- दबाव समूह सदस्य संख्या, उद्देश्य, चुनाव आदि की दृष्टि से राजनीतिक दल से अलग होता है।
- दबाव समूहों का कार्यक्षेत्र राजनीतिक दलों की तुलना में सीमित होता है।
- दबाव समूह सरकार पर अपना प्रभाव राजनीतिक दलों के माध्यम से ही डालते हैं।
- दबाव समूह सभी प्रकार की राजनीतिक व्यवस्थाओं में पाए जाते हैं। इसी कारण इनकी प्रकृति सर्वव्यापी होती है।
- दबाव समूहों की सदस्यता ऐच्छिक होती है। एक व्यक्ति एक समय में अनेक दबाव समूहों का सदस्य बन सकता है।
- दबाव समूहों का कार्यकाल अनिश्चित होता है।
- दबाव समूहों गैर-राजनीतिक संगठन होते हैं।

दबाव समूह के कार्य

दबाव समूह के निम्नलिखित कार्य हैं

☞ **शासन के लिए सूचनाएं एकत्रित करना**

- ❖ शासन को सुचारू रूप से चलाने के लिए प्रत्येक देश की सरकार तथा शासन के पास आवश्यक सूचनाएं पर्याप्त मात्रा में होनी चाहिए। शासन की सूचनाओं के गैर सरकारी स्रोत के रूप में दबाव समूह महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं दबाव समूह आंकड़े एकत्रित करते रहते हैं तथा उन्हें सरकार को पहुंचाते हैं।

☞ **सरकार की निरंकुशता को सीमित करना**

- ❖ दबाव समूह अपने साधनों द्वारा केंद्रीकरण की प्रवृत्ति के कारण सरकार की बढ़ती हुई निरंकुशता को सीमित करते हैं।

☞ **लोकतांत्रिक प्रक्रिया की अभिव्यक्ति के साधन**

- ❖ दबाव समूह को लोकतंत्र की अभिव्यक्ति का साधन माना जाता है दबाव समूह विभिन्न तरीकों से अपनी मांगे मनवाने का प्रयास करते हैं। जनता को शिक्षित करके आंकड़े एकत्रित करके नीति निर्माताओं के पास आवश्यक सूचना पहुंचा कर अपनी अभीष्ट की प्राप्ति करना आज लोकतांत्रिक प्रक्रिया का अंग बन गया है।

☞ **व्यक्ति और सरकार के मध्य संचार के साधन**

- ❖ दबाव समूह के कार्य लोकतान्त्रिक व्यवस्था में दबाव समूह व्यक्तिगत हितों का राष्ट्रीय हितों के साथ सामंजस्य स्थापित करते हैं यह जनता और सरकार के मध्य संचार साधन का कार्य करते हैं।

☞ **विधानमंडल के पीछे विधानमंडल का कार्य**

- ❖ दबाव समूह विधि निर्माण में सांसदों विधायकों की सहायता करते हैं। अपनी विशेषज्ञता के कारण यह विधि निर्माण समिति के सदस्यों को आवश्यक परामर्श देते हैं। इनके इनके परामर्श वह सहायता के कारण ही इन्हें विधानमंडल के पीछे विधानमंडल कहा जाने लगा है।

☞ **क्षेत्रीय प्रतिनिधित्व के पूरक**

- ❖ वर्तमान प्रजातांत्रिक व्यवस्था में क्षेत्रीय प्रतिनिधित्व की प्रणाली को अपनाया जाता है। क्षेत्रीय प्रतिनिधित्व में व्यावसायिक प्रतिनिधित्व के तत्वों को सम्मिलित करने इसके द्वारा क्षेत्रीय 'प्रतिनिधित्व के पूरक' की भूमिका निभाई जाती है।

दबाव समूह के महत्त्व

दबाव समूह के महत्त्व को निम्नलिखित आधारों पर दर्शाया जा सकता है-

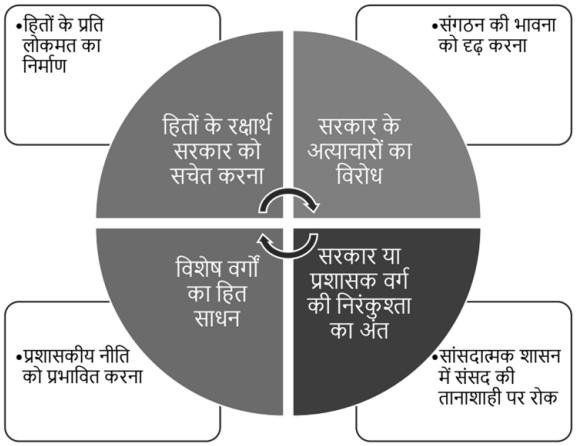

☞ **हितों के प्रति लोकमत का निर्माण**

- ❖ दबाव गुटों का प्रमुख लाभ यह है कि इन गुटों के माध्यम से जनता को यह पता चलता है कि उसके हित किन-किन बातों में निहित है यदि दबाव घुटना हो तो जनता को यह पता न चले कि कौन-सी बाद में उसका हित छुपा हुआ है दबाव गुट ही किसी विचारधारा के पक्ष में एक स्वस्थ लोकमत का निर्माण करने में सफल हो सकते हैं।

☞ **हितों के रक्षार्थ सरकार को सचेत करना**

- ❖ दबाव गुट सदैव ही अपने हितों के लिए सरकार से मांग करते हैं। यह दबाव गुट सरकार को हितों की पूर्ति के लिए सदैव जागृत सकते हैं यदि सरकार इनके हितों के प्रति उपेक्षा रखती है तो वह हड़ताल वह विरोध प्रदर्शन आदि का सहारा लेकर सरकार को हितों की पूर्ति करने के लिए विवश करते हैं इन दबाव गुटों की ऐसी कार्यवाही ओं के कारण सरकार सदैव जागरूक रहती है इसलिए दबाव गुटों को सरकार की जागृति का साधन माना गया है।

☞ **सरकार के अत्याचारों का विरोध**

- ❖ दबाव गुट के गुण में सरकार के अत्याचारों से जनता की रक्षा करते हैं यदि कोई सरकार दबाव गुटों के हितों के विरुद्ध कार्य करती है तो दबाव गुट उस सरकार के विरुद्ध हड़ताल या विरोध प्रदर्शन करते हैं और इस प्रकार सरकार की निरंकुशता का अंत करते हैं।

☞ **संगठन की भावना को दृढ़ करना**

- ❖ दबाव गुटों का अपना एक ग्रेड संगठन होता है इस संगठन से प्रभावित होकर समाज के अन्य समूह में संगठित होने लगते हैं। और इस प्रकार दबाव कोट समाज के विभिन्न समूह को संगठित होने के लिए प्रेरित करता है।

☞ **विशेष वर्गों का हित साधन**

❖ दबाव गुट का संबंध किसी ना किसी विशिष्ट सामाजिक वर्ग से होता है। इन विशिष्ट सामाजिक वर्गों के हितों की सुरक्षा इन्हीं द्वार गुटों के कारण संभव है।

☞ **प्रशासकीय नीति को प्रभावित करना**

❖ दबाव गुट प्रशंसकों को यह भी सुझाव देते हैं कि उनको कब और किस प्रकार के कानून बनाने हैं। दबाव गुटों के द्वारा अपने हितों के बारे में बार-बार सरकार के सामने अपनी मांगे पेश की जाती हैं। इन्हीं मांगू के आधार पर संसद में प्रशासकीय वर्ग को दबाव गुटों के हितों से संबंधित प्रस्तावों को प्रस्तुत करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त दबाव गुटों का सीधा संबंध राजनीतिक दलों से होता है इसलिए भी दबाव गुट प्रशंसकों को प्रभावित करते हैं।

☞ **सांसदात्मक शासन में संसद की तानाशाही पर रोक**

❖ सांसदात्मक शासन प्रणाली में जनता के प्रतिनिधि विधानसभाओं में पहुंचते हैं। प्रतिनिधि अपने-अपने दलों या क्षेत्र के हित में कानून का निर्माण करने का प्रयास करते हैं किंतु इसके साथ ही वह दबाव गुटों के हितों की रक्षा करने पर भी विवश हो जाते हैं। इस प्रकार दबाव समूह सांसदात्मक सरकार में संसद की तानाशाही पर एक अंकुश का कार्य करते हैं।

☞ **सरकार या प्रशासक वर्ग की निरंकुशता का अंत**

❖ दबाव समूह के भाई से सरकार या प्रशासक वर्ग कोई भी निरंकुश कार्य कार्य नहीं कर सकता है इसलिए कहा जाता है कि दबाव समूह सरकार व प्रशासकों पर नियंत्रण करके जनता के हितों की रक्षा करता है।

भारत में कुछ महत्त्वपूर्ण दबाव समूह

फेडरेशन ऑफ इंडियन चौंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (FICCI)-

❖ इसकी स्थापना वर्ष 1927 में हुई थी। फिक्की भारत में सर्वाधिक बड़ा और सार्वजनिक पुराना व्यावसायिक संगठन है जो देश की आर्थिक नीतियों व उद्योगपतियों के हितो के संरक्षण हेतु कानून बनाने का उन्हें लागू करने हेतु सरकार पर दबाव डालता है।

❖ यह देश में उद्योग और वाणिज्य के विकास में उपयोगी आर्थिक और वैज्ञानिक अनुसंधानों को बढ़ावा देता है। इसके साथ ही व्यावसायिक व तकनीकी शिक्षा का भी प्रबंधन करता है। निवेश का व्यापार समझौतों के प्रभावों पर अपनी राय भी व्यक्त करता है।

एसोसिएटेड चौंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री ऑफ इंडिया (ASSOCHAM)-

❖ यह एक गैर-लाभकारी संगठन और प्रमुख व्यावसायिक दबाव समूह है, जिसने भारतीय उद्योग के लिये वर्ष 1920 से काम करना प्रारंभ किया।

❖ यह उद्योग जगत के हितों के संरक्षण के लिये विभिन्न मुद्दों जैसे- औद्योगिक संवृद्धि, मौद्रिक एवं राजकोषीय नीति, विनिमय दर नीति, आर्थिक नियोजन, करारोपण और कॉरपोरेट कानूनों पर अपनी विशेषज्ञ राय देते हुए सरकार की नीतियों को प्रभावित करने की कोशिश करता है।

इंडियन चौंबर ऑफ कॉमर्स-

❖ इनकी स्थापना वर्ष 1925 में हुई, यह भारत का प्रमुख व्यवसाय समूह है। यह फिक्की का संस्थापक सदस्य भी है।

❖ यह पूर्वी और उत्तर-पूर्वी भारत में औद्योगिक विकास, व्यापार व वाणिज्य की बेहतर दशाओं के निर्माण के लिये सरकार के निर्णय को प्रभावित करता है।

❖ यह वार्षिक स्तर पर उत्तर-पूर्व बिजनेस समिति का आयोजन करता है और उत्तर-पूर्व के आर्थिक विकास की संभावनाओं का अन्वेषण करता है।

दबाव समूह के आलोचना

दबाव समूह की आलोचना निम्नलिखित आधारों पर किया जा सकता हैं जिनको एक आरेख के माध्यम से दर्शाया गया है-

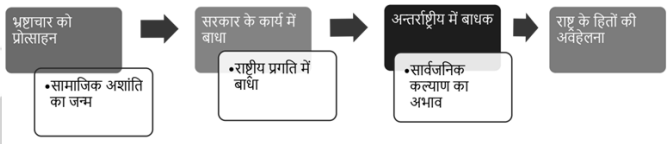

☞ **भ्रष्टाचार को प्रोत्साहन**

❖ दबाव गुट समाज में अपने स्वास्थ्य की पूर्ति करने के लिए भारतीय भारती के अनुचित साधनों का प्रयोग करके भ्रष्टाचार को बढ़ावा देते हैं इस प्रकार भ्रष्टाचार की वृद्धि के कारण समाज में अनेक प्रकार के दोष उत्पन्न हो जाते हैं और इसलिए अंत में सामाजिक विघटन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

☞ **सामाजिक अशांति का जन्म**

❖ विभिन्न दबाव गुटों के कारण समाज में विभिन्नता रखने वाले विभिन्न समूह में विभाजित हो जाता है विभिन्न समूह अपने अपने स्वार्थों के पूरा करने के लिए परस्पर लड़ते रहते हैं इसलिए समाज में अशांति की स्थिति उत्पन्न हो जाती है इस दृष्टि से यह कहना भी अनुचित न होगा कि दबाव गुटों के कारण सामाजिक अशांति का जन्म होता है।

☞ **सरकार के कार्य में बाधा**

❖ दबाव गुट अपने हितों की रक्षा करते हैं और अपने स्वार्थों को पूरा करने के लिए सरकार के कार्य में बाधा उपस्थित करते हैं इसलिए दबाव गुटों को सरकारी कार्यों का रोड़ा कहा जाता है।

☞ **राष्ट्रीय प्रगति में बाधा**

❖ दबाव गुट राष्ट्र की प्रगति में भी बाधक सिद्ध होते हैं क्योंकि यह संसद के विधि-निर्माण संबंधी कार्यों में बाधा डालते हैं और प्रकाश को पर अनुचित प्रभाव डालकर प्रकाशीय कुशलता को कम करते हैं।

☞ **अन्तर्राष्ट्रीय में बाधक**

❖ अनेक बार दबाव समूह अंतरराष्ट्रीय हितों को हानि पहुंचाने का भी आधार बन जाते हैं इस प्रकार या अंतरराष्ट्रीय हितों में बाधक होते हैं।

☞ **सार्वजनिक कल्याण का अभाव**

❖ दबाव समूह अपने-अपने हितों की सुरक्षा में इतने लीन रहते हैं कि उनका सार्वजनिक कल्याण के कार्यों के लिए कोई भी समय नहीं मिलता है। इसलिए कुछ आलोचकों ने यहां तक कह दिया कि दबाव गुट सार्वजनिक कल्याण की भावना की अपेक्षा करते हैं। इन दबाव समूह के स्वार्थ इस सीमा तक टकराते हैं कि इन्हें सार्वजनिक हितों की अपेक्षा अवश्य ही करनी पड़ती है।

☞ **राष्ट्र के हितों की अवहेलना**

❖ दबाव समूह के दोष अपने ही स्वार्थ में इतने अंधे हो जाते हैं कि उनका ध्यान राष्ट्र के हितों की ओर नहीं जाता है। भारत में ही दबाव समूह के कारण राष्ट्रीय हितों की अपेक्षा कई बार की गई है। बैंकों का राष्ट्रीयकरण राष्ट्रीय के हित में था किंतु व्यापारियों के संघ ने एक दबाव समूह के रूप में इस राष्ट्रीयकरण के मार्ग में बहुत दिनों तक बढ़ाया उपस्थिति की। ये दबाव गुट अंतर्राष्ट्रीय हितों को भी हानि पहुंचाते हैं। कभी-कभी यह दबाव समूह अपनी मांगों को पूरा करने के उद्देश्य से आतंकवादी समूह से भी अपना संबंध स्थापित कर लेते हैं।

❑❑❑

KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR